Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वट पूर्णिमा व्रत के नियम ॥

॥ वट पूर्णिमा शुभ हो ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ तिथि, संकल्प और उपवास ॥

सही तिथि पहचानें

वट पूर्णिमा ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा के अवसर पर मनाई जाती है। अमावस्या का वट सावित्री व्रत अलग क्षेत्रीय तिथि है। व्रत की तारीख, पूर्णिमा तिथि और पूजा का समय अपने शहर के पंचांग तथा घर की परंपरा से जाँचें।

अपनी क्षमता से संकल्प

सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें और देवी सावित्री का स्मरण करें। परिवार के मंगल के लिए व्रत रखें। कुछ घरों में केवल पूर्णिमा का उपवास होता है, जबकि कुछ परंपराओं में पहले से विशेष नियम होते हैं; सब पर एक ही अवधि लागू न करें।

भोजन और जल

फलाहार, जल सहित उपवास या अधिक कठोर व्रत का रूप स्वास्थ्य और घर के नियम से तय करें। निर्जला रहना हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य नहीं है। पहले से पीने के पानी, दवा और पारण के हल्के भोजन की तैयारी रखें।

पूजा और कथा

वट वृक्ष को जल-पुष्प अर्पित करें और सावित्री-सत्यवान की कथा पढ़ें या सुनें। कच्चा सूत और परिक्रमा की रीति हो तो पेड़ की देखभाल करते हुए करें। पूजा के बाद परिसर साफ छोड़ें।

॥ पारण, आचरण और सावधानियाँ ॥

पारण की पारिवारिक रीति

पूजा के बाद व्रत खोलने का समय अपने संकल्प से जुड़ा होता है। कुछ घर उसी दिन जल और प्रसाद लेते हैं, अन्य घरों में अलग परंपरा हो सकती है। बिना तिथि और स्थान के निश्चित समय न मानें।

सम्मान का भाव

व्रत प्रेम और मंगलकामना की अभिव्यक्ति है। किसी महिला पर उपवास या श्रृंगार का दबाव न डालें। घर में सहयोग बाँटें और सभी सदस्यों की स्वास्थ्य-आवश्यकताओं का सम्मान करें।

वृक्ष तथा अग्नि की सुरक्षा

तने पर सूत बहुत कसकर न लपेटें। कील, प्लास्टिक और भारी सजावट से वृक्ष को क्षति न पहुँचाएँ। दीपक और धूप को सूखी जड़ों, पत्तों तथा हवा से सुरक्षित रखें।

अस्वस्थता में व्रत

गर्भावस्था, मधुमेह, कम रक्तचाप, बीमारी या दवा के साथ उपवास से पहले चिकित्सकीय सलाह लें। चक्कर, कमजोरी या प्यास से अस्वस्थता हो तो तुरंत व्रत खोलें। धार्मिक आस्था के साथ शरीर की देखभाल भी आवश्यक है।

यह सामान्य मार्गदर्शन है; विशेष परिवारों के नियम अलग हो सकते हैं। पूजा से स्वास्थ्य या आयु के निश्चित परिणाम की गारंटी न मानें।

॥ देवी सावित्री सबका मंगल करें ॥